



ISSN 0973-2616

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 10 अंक 4

www.csir.res.in

अप्रैल 2022

किसान सभा और आरोग्यपथ को
सीएसआईआर- निस्पर में हस्तांतरित करने के लिए
सीएसआईआर-निस्पर और सर्वोदय इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड
(ट्रक सुविधा) के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर



सीएसआईआर-निस्पर और सर्वोदय इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड (ट्रक सुविधा)
के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर

07 अप्रैल 2022 को किसान सभा और आरोग्यपथ को सीएसआईआर-निस्पर में हस्तांतरित करने के लिए सीएसआईआर-निस्पर और सर्वोदय इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड (ट्रक सुविधा) के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। एमओयू पर प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर- निस्पर और मि. अमित पुनैनी, प्रबंध निदेशक, ट्रक सुविधा (सर्वोदय इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड की इकाई) ने हस्ताक्षर किए।

किसानों को आपूर्ति श्रृंखला और माल परिवहन प्रबंधन प्रणाली से जोड़ने के लिए किसान सभा बनाई गई थी। इस ऐप को सीएसआईआर-सीआरआरआई और सर्वोदय इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से विकसित और लॉन्च

किया गया है। इसे 01 मई, 2020 को डीजी, सीएसआईआर डॉ शेखर मांडे की उपस्थिति में डॉ टी महापात्रा, डीजी, आईसीएआर और सचिव, डेयर द्वारा लॉन्च किया गया। किसान सभा में किसानों, मंडी डीलरों, ट्रांसपोर्टरों, मंडी बोर्ड के सदस्यों, सेवा प्रदाताओं और उपभोक्ताओं को सुविधा देने वाले 6 प्रमुख मॉड्यूल हैं। यह ऐप कृषि से जुड़ी हर इकाई के लिए सिंगल स्टॉप का काम करता है। आरोग्यपथ सीएसआईआर का एक नेशनल हेल्थकेयर सप्लाइ चैन पोर्टल है जिसका उद्देश्य महत्वपूर्ण स्वास्थ्य आपूर्ति की वास्तविक समय पर उपलब्धता प्रदान करना है। इसे 12 जून, 2020 को लॉन्च किया गया है। आरोग्यपथ निर्माताओं, आपूर्तिकर्ताओं और ग्राहकों को सेवा प्रदान करता है। कोविड-19 महामारी के दौरान, जहां

आपूर्ति श्रृंखला में गंभीर व्यवधान उत्पन्न हुआ तथा विभिन्न कारणों से महत्वपूर्ण वस्तुओं के उत्पादन और वितरण की क्षमता से समझौता किया गया, ऐसे में आरोग्य सेतु का विकास इन चुनौतियों का समाधान करने तथा एक ऐसा मार्ग प्रदान करने हेतु किया गया जो आपको आरोग्य (स्वस्थ जीवन) की यात्रा की ओर ले जाता है।

विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान होने के नाते, सीएसआईआर-निस्पर इस समझौते के लिए पूर्ण सहयोग प्रदान करेगा। दोनों पक्षों ने तौर-तरीकों, नियमों और शर्तों, वित्तीय व्यवस्थाओं, बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) आदि के विस्तृत विवरण के लिए सहमति व्यक्त की।



सीएसआईआर-निस्पर और सर्वोदय इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड की आउटरीच टीम

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-एनएमएल, जमशेदपुर द्वारा हिंदी में ऑनलाइन वैज्ञानिक व्याख्यान माला का आयोजन

10 जनवरी 2022 को विश्व हिंदी दिवस के पुनीत अवसर पर सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला द्वारा आयोजित तकनीकी व्याख्यान माला के अंतर्गत इस प्रयोगशाला के अनेक वरिष्ठ वैज्ञानिकों, शोधार्थियों तथा तकनीकी व्याख्यान आयोजन समिति के सभी सदस्यों ने भाग लिया। हिंदी भाषा में समर्पित वैज्ञानिक व्याख्यान भाषानुकूल अति सरल, सहज-संप्रेषणीय और हृदय तक पहुंचने में सर्वथा समर्थ थे। कार्यक्रम में व्याख्यान प्रस्तुत करने वाले डॉ. अरविन्द सिन्हा मुख्य वैज्ञानिक सह सलाहकार, प्रबंधन ने “बायोमिमेटिक: अज्ञात पथ पर मेरी एक अनियोजित शोध यात्रा” विषय पर अति महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। नैनो मटेरियल की चर्चा करते हुए उन्होंने तथा उनकी टीम ने जो शोध किया और विश्व की मानवता के कल्याण के लिए आने वाले दिनों में इसका जो महत्वपूर्ण उपयोग होने वाला है, उन सारी बातों को विस्तार से बताया।

बायोमीमेटिक मटेरियल के द्वारा उन्होंने कृत्रिम हड्डी के निर्माण और उन्हें जुड़ने में प्रयुक्त होने वाले नैनो मटेरियल के बारे में विस्तार से बताया।

डॉ. प्रतिमा मेश्राम, प्रधान वैज्ञानिक ने धातुओं का पुनर्चक्रण विषय पर अपने द्वारा किए गए शोध की महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाई और बताया कि किस प्रकार पदार्थों के पुनर्चक्रण के द्वारा विश्व के संसाधन को बचाया जा सकता है और महत्वपूर्ण धातुओं की प्राप्ति की जा सकती है तथा पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सकता है।

डॉ. एस.के. झा, प्रधान वैज्ञानिक ने “विद्युत-लेपन तकनीक की उपयोगिता एवं संभावनाएं” विषय पर प्रयोगशाला द्वारा शोध किए गए विभिन्न विद्युत लेप पर विस्तार से चर्चा की और बताया कि किस प्रकार सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला इस दिशा में राष्ट्र को अपनी महत्वपूर्ण सेवा प्रदान कर रही है।

श्री कृष्णा कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने “ब्रह्मांड में धातु और धातुकर्म की कला एक परिप्रेक्ष्य” विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया।

श्री सोमनाथ दास, परियोजना सहायक-II ने मैग्नेटोस्ट्रिक्टिव सेंसर का उपयोग करके पाइपों का अल्ट्रासोनिक निर्देशित तरंग परीक्षण “विषय पर व्याख्यान देते हुए बताया कि इस तरंग

परीक्षण द्वारा पाइपों की अंदरूनी स्थिति का पता सरलतापूर्वक लगाया जा सकता है और संसाधन की सुरक्षा की जा सकती है।

श्री अजीत गंगवार, परियोजना एसोसिएट ने संक्षारण विषय पर अपना महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में व्याख्यान समिति के डॉ. आर के साहू, डॉ. रणजीत कुमार सिंह, श्री विराज साहू ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सफलतापूर्वक मंच के संचालन तथा कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करने में वैज्ञानिक श्री कालीचरण हेंब्रम जी की भूमिका अति महत्वपूर्ण थी। प्रयोगशाला के राजभाषा विभाग के प्रमुख डॉ. पुरुषोत्तम कुमार ने कार्यक्रम का संयोजन किया। प्रयोगशाला के निदेशक डॉ. इंद्रनील चट्टोराज ने विश्व हिंदी दिवस के पावन अवसर पर प्रयोगशाला के सभी कार्मिकों को बधाई दी और भविष्य में भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक विषयों पर इसी प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन करने की अपेक्षा की।

भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान में हिंदी कार्यशाला आयोजन

31 मार्च, 2022 को भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान के द्वितीय तल स्थित सेमिनार कक्ष में वैज्ञानिक कर्मचारियों के लिए एक-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया एवं संस्थान के वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक श्री बी. के. कर के स्वागत भाषण द्वारा इस कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया।



कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री अनुप कुमार, सहायक निदेशक (हिंदी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, कोलकाता) द्वारा कंप्यूटर पर यूनिकोड के उपयोग से हिंदी में कार्य करने एवं राजभाषा के उपयोग से हिंदी के कार्यालयीन कार्य करने की पद्धति सिखाया।

श्री अनुप कुमार ने कंप्यूटर पर यूनिकोड हिंदी कीबोर्ड द्वारा टाईपिंग के अलावा वॉइस टाईपिंग की विधि से सभी को अवगत कराते हुए यह भी बताया कि कंप्यूटर पर हिंदी टाईप करने में ईयरफोन या मोबाईल से वॉइस टाईपिंग उपयोग कैसे किया जाता है।

कार्यशाला में सभी वैज्ञानिक कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया एवं सभी ने



राजभाषा हिंदी में कार्य करने का संकल्प लिया। संस्थान की हिंदी अधिकारी श्रीमती

अम्बालिका नाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस कार्यशाला का समापन हुआ।

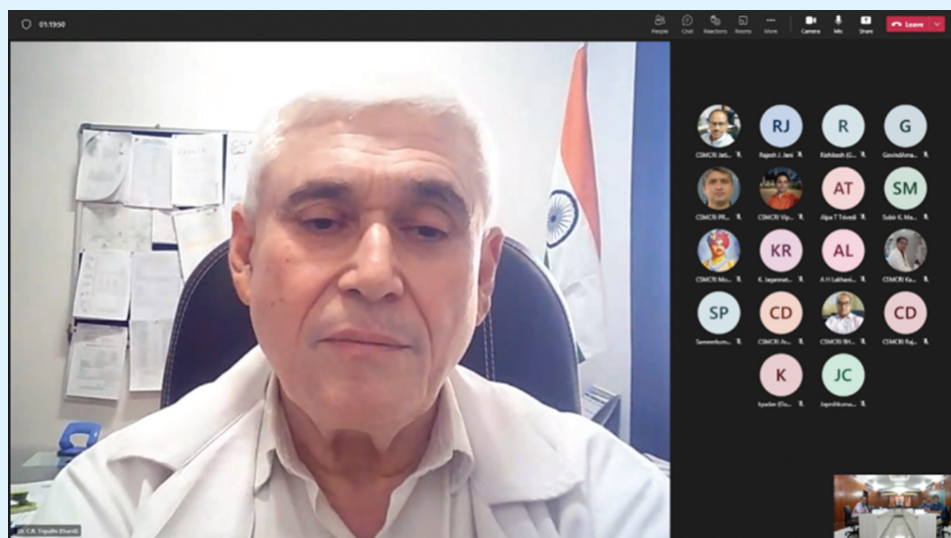
सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई में 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' समारोह का आयोजन

सीएसआईआर-केन्द्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआई), भावनगर में 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के उपलक्ष्य में 28 मार्च, 2022 को कोविड-19 संरक्षा का पालन करते हुये ऑनलाइन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में जायडस मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय, दाहोद (गुजरात) के डीन प्रो. (डॉ.) सी.बी. त्रिपाठी ब मुख्य अतिथि उपस्थित रहे तथा "मातृभाषा में अध्ययन की उपयोगिता" विषय पर व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. कान्ति भूषण पाण्डेय ने सभी का स्वागत करते हुए संस्थान का संक्षिप्त परिचय दिया और बताया कि 'संयुक्त राष्ट्र' ने वर्ष 2022 और 2032 के बीच की अवधि को स्वदेशी भाषाओं के अंतर्राष्ट्रीय दशक के रूप में नामित किया है, इससे इस तरह के समारोह का महत्व और बढ़

जाता है। मुख्य अतिथि प्रो. त्रिपाठी ने समारोह में अपने विचार रखते हुये महाकवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पंक्तियाँ "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन

निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल" को उद्धरित करते हुये कहा मातृभाषा का सम्मान व उसका संवर्धन विकसित भारत की मजबूत नींव रखेगा। देश के



कार्यक्रम में ऑनलाइन व्याख्यान देते
मुख्य अतिथि- प्रो. (डॉ.) सी.बी. त्रिपाठी, डीन, जायडस मेडिकल कॉलेज एवं
चिकित्सालय, दाहोद, गुजरात।



समग्र विकास एवं अखंडता हेतु प्रादेशिक भाषाओं का सम्मान व उनका संवर्धन बहुत आवश्यक है। मातृभाषा में सीखने की क्षमता बढ़ती है। प्रत्येक भारतीय को राजभाषा एवं अपनी मातृभाषा में बोलने और कार्य करने में गर्व महसूस करना चाहिए।

संस्थान के निदेशक प्रो. (डॉ.) कन्नन श्री निवासन ने कहा कि 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' का आयोजन विश्व में भाषाई व सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देना है। इस तरह के आयोजनों से देश में भाषाई एकता का भाव पैदा होता है और हम विविधता में एकता की भावना

से राजभाषा हिन्दी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के विकास करने हेतु प्रेरित होंगे। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान के सभी कर्मियों से हिंदी के साथ मातृभाषाओं के विकास और संवर्धन का आह्वान किया। कार्यक्रम का ऑनलाइन प्रबंधन श्री संदीप वनिया, व. वैज्ञानिक ने किया।

सीएसआईआर-एनएमएल, जमशेदपुर द्वारा अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर मातृभाषा में ऑनलाइन वैज्ञानिक व्याख्यान माला का आयोजन

"अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस" के अवसर पर सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला (एनएमएल), जमशेदपुर द्वारा 21 फरवरी, 2022 को ऑनलाइन वैज्ञानिक व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। इसमें एनएमएल के अनेक वरिष्ठ वैज्ञानिक, शोधार्थी और तकनीकी व्याख्यान आयोजन समिति के सदस्यों ने पूरी तन्मयता और निष्ठा के साथ इसमें भाग लिया और अपने शोध कार्य तथा समूह अनुसंधान गतिविधियों को "अपनी-अपनी मातृभाषा" में प्रस्तुत किया। इससे यह पूर्णतः स्पष्ट हुआ कि सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला, जमशेदपुर के वैज्ञानिक, तकनीकी विषयों को पूरी निपुणता और सक्षमता के साथ अपनी-अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्त कर सकते हैं। ये सभी राष्ट्र के गौरव को उत्कर्ष तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा सकते हैं। अपनी-अपनी मातृभाषा में समर्पित वैज्ञानिक व्याख्यान भाषानुकूल अति सरल, सहज-संप्रेषणीय और हृदय तक पहुंचने में सर्वथा समर्थ थे।

प्रयोगशाला के निदेशक, डॉ. इंद्रनील चट्टोराज ने कहा कि भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर आज की संगोष्ठी काफी महत्वपूर्ण है। भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सभी वैज्ञानिक शोध संस्थानों में मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा में शोध और अन्वेषण करने की पहल शुरू कर दी है। सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं में भारतीय भाषाओं के सम्यक विकास के लिए 7 सूत्री चार्टर बनाए गए हैं जिसे सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं में लागू करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति बच्चों को उनकी मातृभाषा तथा प्रांतीय भाषाओं में सीखने पर बल देती है। यह एक अभूतपूर्व निर्णय है और इसे लागू करने में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

उच्च शिक्षण तथा शोध संस्थानों में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के प्रयोग को किस प्रकार बढ़ावा देना है ताकि हमारे बच्चे बिना किसी बाधा के सहजतापूर्वक वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों की समझ को विकसित कर सकें। हमारी परिकल्पना आत्मनिर्भर भारत की है और हमें जीवन के हर एक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी अनुसंधानों ने मानव जीवन को विकसित तथा सुविधापूर्ण बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसी भी देश

में विज्ञान का प्रचार-प्रसार जन भाषा में ही प्रभावकारी और प्रेरक बन सकता है। यह नई नीति देश में स्कूल और उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों का मार्ग प्रशस्त करेगी। भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कई बड़े बदलाव किए गए हैं, जिनमें शीर्ष विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में कैंपस स्थापित करने की अनुमति देना तथा छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना जैसे बड़े कदम शामिल हैं। इस नीति का लक्ष्य "भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति" के रूप में विकसित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से भारत अपने वैभव को पुनः प्राप्त करेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को गुणवत्ता, पहुंच, जवाबदेही, सामर्थ्य और समानता के आधार पर एक समूह प्रक्रिया के अंतर्गत बनाया गया है। जहां विद्यार्थियों के कौशल विकास पर ध्यान दिया गया है वहीं पाठ्यक्रम को लचीला बनाया गया है ताकि वे अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से हम भारत को गुणवत्तापरक, नवाचार युक्त, प्रौद्योगिकी युक्त और भारत केंद्रित शिक्षा दे पाने में सफल होंगे। भारत सरकार

के निर्णय के आलोक में सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं में भाषा के संबंध में जो 7 सूत्री कार्यक्रम बनाए गए हैं उससे वैज्ञानिक शोध संस्थानों में भारतीय विरासत को प्राप्त करने और इसके गौरव को पुनः स्थापित करने में काफी मदद मिलेगी।

यह गौरव की बात है कि अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर आज सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला, जमशेदपुर में हिंदी, बंगला, उड़िया, तमिल, तेलुगू तथा मैथिली भाषा में वैज्ञानिक व्याख्यान का आयोजन किया गया है। इस तरह का आयोजन भारत की सामासिक संस्कृति को उत्कर्ष प्रदान करेगा और वैज्ञानिक क्षेत्र में लोकमंगल के लिए हम नई ऊंचाई प्राप्त करने में सफल होंगे। इस कार्यक्रम में अपना व्याख्यान अपनी-अपनी मातृभाषा में प्रस्तुत करने वाले सभी वैज्ञानिकों को बधाई दिया।

प्रयोगशाला के राजभाषा विभाग के प्रमुख डॉ. पुरुषोत्तम कुमार ने कार्यक्रम का संयोजन किया और कहा कि आज का दिन ऐतिहासिक है। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2022 से लेकर वर्ष 2032 के बीच की अवधि को स्वदेशी भाषाओं के अंतरराष्ट्रीय दशक के रूप में नामित किया है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है कि विश्व में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता एवं बहुभाषिकता को बढ़ावा मिले। ऐसे आयोजनों से देश में भाषाई एकता का भाव पैदा करने में मदद मिलेगी। हमें विविधता में एकता की भावना से राजभाषा हिंदी के साथ-साथ प्रादेशिक भाषाओं का विकास करने की प्रेरणा मिलेगी। भारत के उपराष्ट्रपति महोदय के विशेष आग्रह पर माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ने वैज्ञानिक विधाओं में भी भारतीय भाषाओं को स्थापित करने का निर्णय लिया है। भारत की राजभाषा तथा

अन्य प्रादेशिक भाषाओं के विकास, संवर्धन एवं संरक्षण के लिए यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों में भी इसके प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए। जब कोई भी भाषा विज्ञान तथा रोजगार की भाषा बनने लगती है तो देश को उत्कर्ष प्राप्त होता है।

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं में शोध पत्रों की प्रस्तुति राजभाषा हिंदी तथा मातृभाषा में करने का निर्णय लिया गया है। विज्ञान के क्षेत्र में पीएच.डी. करने वाले सभी छात्रों के लिए यह अनिवार्य कर दिया गया है कि उनके शोध पत्रों के सारांश राजभाषा हिंदी के साथ-साथ उनकी मातृभाषा में भी लिखे हो। इस मंत्रालय द्वारा 7 सूत्री कार्यक्रम बनाए गए हैं, जिसका अनुपालन सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं को करना है। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा के अवसर पर सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला, जमशेदपुर में आयोजित वैज्ञानिक व्याख्यान माला का आयोजन एक छोटी सी शुरुआत है जिसके अंतर्गत आज हिंदी, बांग्ला, मैथिली, उड़िया, तेलुगू तथा तमिल भाषाओं में वैज्ञानिक व्याख्यान की प्रस्तुति दी जाएगी। यह गौरव की बात है कि अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के पुनीत अवसर पर आज के व्याख्यान में हमारी प्रयोगशाला के अलावे नराकास के कई सदस्य कार्यालय जुड़े हुए हैं, मैं आप सभी का हार्दिक अभिनंदन करता हूं और व्याख्यान देने वाले सभी वैज्ञानिक मित्रों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। वह दिन दूर नहीं है जब हमारी मातृभाषाओं में शीघ्र ही वैज्ञानिक शोध पत्र लिखे जाएंगे और हमारी राष्ट्रीय प्रज्ञा विश्व में उत्कर्ष पर होगी।

कार्यक्रम में व्याख्यान प्रस्तुत करने वाले मुख्य वैज्ञानिक सह सलाहकार प्रबंधन, डॉ. अरविन्द सिन्हा ने "स्थानीय भाषा और विज्ञान : मन की बात" विषय पर

अति महत्वपूर्ण व्याख्यान हिन्दी भाषा में दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य समाज को चुनौतीपूर्ण बनाना है ताकि वह जन-जन तक पहुँच सके। विदेशों में अनेक ऐसे देश भी हैं जो चाह रहे हैं कि उनकी भाषा क्षेत्रीय भाषा हो ताकि वहाँ के लोग आमजन की भाषा में बोल और समझ सकें। वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे क्षेत्रीय भाषाओं को भी ग्रहण करें ताकि शोध कार्य को सरलतापूर्वक समझा व बोला जा सके।

वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. अतनु दास ने "वेल्डिंग अनुसंधान पर एक संक्षिप्त चर्चा" विषय पर अपने द्वारा किए गए शोध की महत्वपूर्ण जानकारी बंगला भाषा में दी। उन्होंने कहा कि वेल्डिंग की पद्धति से धातु को जोड़ा जाता है। ताप के द्वारा हम एक धातु को दूसरे धातु से वेल्डिंग की पद्धति के माध्यम से जोड़ने का काम करते हैं। गैस मेटल आर्क वेल्डिंग के माध्यम से भी हम एक धातु को दूसरे धातु से संयुक्त कर सकते हैं। इसके अलावे उन्होंने वेल्डिंग पद्धति से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण जानकारी को सभी के समक्ष पावर पॉइंट के माध्यम से दिखाकर साझा किया।

प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. शैलेन्द्र कुमार झा ने "विद्युत-लेपन तकनीक की उपयोगिता एवं संभावनाएं" विषय पर अपने द्वारा किए गए शोध कार्य की महत्वपूर्ण जानकारी मैथिली भाषा में दी। उन्होंने कहा कि हम अपने घरों में धातु की सजावटी सामग्री का उपयोग करते हैं जो कि पूरी तरह से धातु के माध्यम से पॉलिश किया होता है। अनुप्रयोगी वैज्ञानिक शोध के माध्यम से विद्युत-लेपन तकनीक आदि की उपयोगिता पर महत्वपूर्ण जानकारी को पावर पॉइंट के माध्यम से दिखाकर प्रस्तुत किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. गणेश चलवाडी ने "शुष्क कोल सज्जीकरण" विषय पर अपने द्वारा किए गए शोध की महत्वपूर्ण जानकारी तेलगु भाषा में दी तथा सभी के समक्ष पावर पॉइंट के माध्यम से दिखाकर साझा किया।

वैज्ञानिक, डॉ. सुमन्त कुमार प्रधान ने "संस्कारण : अभिशाप या वरदान" विषय पर अपने द्वारा किए गए शोध की महत्वपूर्ण जानकारी उड़िया भाषा में दी तथा सभी के समक्ष पावर पॉइंट के माध्यम से इसे प्रस्तुत किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री प्रेमकुमार एम. ने "प्राचीन तमिल साहित्य में विज्ञान"

विषय पर अति महत्वपूर्ण जानकारी तमिल भाषा में दी तथा इस जानकारी को सभी के समक्ष पावर पॉइंट के माध्यम से प्रस्तुत किया।

ऊपर्युक्त कार्यक्रम में प्रयोगशाला के वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों के अलावा नराकास जमशेदपुर के कई सदस्य कार्यालयों जैसे एनआईटी जमशेदपुर, इंडो डैनिश टूल्स रूम, सीआरपीएफ, एएमडी, पावर ग्रिड, एन ए एल बेंगलुरु, आदि कार्यालयों सहित आईआईटी खड़गपुर के छात्र-छात्राओं ने इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में व्याख्यान समिति के डॉ. आर. के. साहू, डॉ. रणजीत कुमार सिंह, श्री बिराज कुमार साहू ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सफलतापूर्वक मंच के संचालन और कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करने में वरिष्ठ वैज्ञानिक, सुश्री आरती कुमारी की भूमिका अति महत्वपूर्ण थी। अंत में धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी समिति के सदस्य सह वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री बिराज कुमार साहू द्वारा किया गया। इस ऑनलाइन वैज्ञानिक व्याख्यान माला में 80 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकियों में डिजिटल क्रांति सीएसआईआर-सीरी जयपुर केंद्र में प्रौद्योगिकी जागरूकता कार्यशाला

सीएसआईआर-सीरी के जयपुर केंद्र में दिनांक 29 मार्च, 2022 को डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकियों में डिजिटल क्रांति विषय पर प्रौद्योगिकी जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। विदित हो कि डिजिटल क्रांति में ऑटोमेशन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, दूरसंचार और उन्नत एनालिटिक्स से लेकर स्मार्ट कार्यप्रणाली और ग्राहक-केंद्रित उत्पादों तक नवीन एवं अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाया जाता है। अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सामयिक विषय पर आयोजित इस कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य एम एस एम ई के उद्यमियों एवं नए स्टार्ट अप्स के साथ-साथ सभी प्रतिभागियों को डेयरी एवं खाद्य के क्षेत्र में सीएसआईआर-सीरी, सीएसआईआर-सीएफटीआरआई, मैसूर तथा सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों एवं इन क्षेत्रों में हो रही डिजिटल क्रांति से अवगत कराना है। कार्यशाला में एमएनआईटी-जयपुर



उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि, प्रोफेसर एन पी पाढ़ी, निदेशक, एमएनआईटी, जयपुर

के निदेशक प्रोफेसर एन पी पाढी मुख्य अतिथि के रूप में तथा आर ई आई एल, जयपुर के पूर्व प्रबंध निदेशक डॉ ए के जैन एवं एम एस एम ई, जयपुर के निदेशक श्री वी के शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सीएसआईआर-सीरी के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने की। कार्यशाला में एम एस एम ई और स्टार्ट अप्स एवं उद्योग जगत के प्रतिनिधियों सहित विज्ञान भारती-राजस्थान के पदाधिकारियों, शोधार्थी छात्रों आदि ने प्रतिभागिता की।

कार्यशाला का उद्घाटन परंपरागत रूप से दीप प्रज्वलन एवं अतिथि सम्मान के साथ हुआ। मुख्य अतिथि प्रोफेसर एन पी पाढी, निदेशक, एमएनआईटी-जयपुर ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीरी द्वारा इस महत्वपूर्ण विषय पर कार्यशाला आयोजन के लिए डॉ पंचारिया की सराहना की। उन्होंने खाद्य और डेयरी उत्पादों में मिलावट व भंडारण को प्राथमिकता मानते हुए इस क्षेत्र में विनिर्माण उद्योगों (Manufacturing Industries) की आवश्यकता बताई तथा एमएसएमई और नए स्टार्ट अप्स को सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों को बाजार में लाने का आह्वान किया।

इससे पूर्व अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने मुख्य अतिथि सहित सभी आमंत्रित वक्ताओं और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला के आयोजन की पृष्ठभूमि से अवगत कराया। देश में डेयरी तथा खाद्य पदार्थों में मिलावट की पहचान की आवश्यकता एवं महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने इस पर भारत सरकार की चिंताओं से अवगत कराया। अपने संबोधन में उन्होंने सीएसआईआर द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों एवं खाद्य उत्पादों की भी



कार्यशाला में स्वागत एवं अध्यक्षीय संबोधन देते हुए डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी



कार्यशाला में उपस्थित अतिथि एवं प्रतिभागीगण

चर्चा की। उन्होंने बताया कि सीएसआईआर ने अपनी स्थापना के बाद से ही डेयरी एवं खाद्य उत्पादों के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया है। डेयरी क्षेत्र में प्रमुख रूप से अमूल बेबी

पाउडर, क्षीर स्कैनर, क्षीर एनालाइजर जैसे खाद्य एवं तकनीकी उत्पादों का विकास किया गया है और खाद्य प्रौद्योगिकियों में पोषण बार, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ



उपस्थित प्रतिभागियों एवं अन्य गणमान्य अतिथियों को संबोधित करते हुए विशिष्ट डॉ ए के जैन, पूर्व प्रबंध निदेशक, आर ई आई एल, जयपुर



विशिष्ट अतिथीय संबोधन देते हुए श्री वी के शर्मा, निदेशक, एमएसएमई, जयपुर



कार्यशाला के दौरान प्रस्तुतीकरण देते हुए वैज्ञानिकगण

के माध्यम से भी बड़े पैमाने पर अपना योगदान दिया है। उन्होंने डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में निवेश के लिए उद्यमियों को आमंत्रित किया।

विशिष्ट अतिथि डॉ ए के जैन, पूर्व प्रबंध निदेशक, आर ई आई एल, जयपुर ने अपने संबोधन में हरित क्रांति और श्वेत क्रांति पर चर्चा करते हुए खाद्य और दूध की सप्लाई चेन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने खाद्य व डेयरी उत्पादों में मिलावट का पता लगाने में विश्लेषणात्मक समाधान (Analytical solution) की आवश्यकता बताई। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में डॉ जैन ने कहा कि इसके साथ साथ आपूर्ति श्रृंखला को भी सुदृढ़ किया जाना बहुत जरूरी है।

विशिष्ट अतिथि श्री वी के शर्मा, निदेशक, एमएसएमई विकास संस्थान, जयपुर ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए नए उद्यमियों, उद्योग जगत के प्रतिनिधियों व उपस्थित शोधार्थियों को इस क्षेत्र में हो रही डिजिटल क्रांति से भारतीय जनमानस को लाभान्वित करने के लिए कहा।

तकनीकी सत्र

उद्घाटन सत्र के उपरांत आयोजित तकनीकी सत्र में सीएसआईआर-सीरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री नवजोत कुमार, वरिष्ठ ने संस्थान द्वारा विकसित डेयरी प्रौद्योगिकियों पर, आईएचबीटी-पालमपुर के डॉ महेश गुप्ता ने खाद्य, चाय और शहद उत्पादों पर तथा सीएफटीआरआई-मैसूर के डॉ प्रकाश हालमी ने बेकरी एवं खाद्य उत्पादों पर अपने प्रस्तुतीकरण दिए।

प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी

कार्यशाला के दौरान सभी गणमान्य अतिथियों ने सीरी जयपुर केंद्र में संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। अतिथियों ने प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी एवं जयपुर केंद्र



प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं अवलोकन करते हुए अतिथिगण



मुख्य अतिथि प्रोफेसर एन पी पाढी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी



विशिष्ट अतिथि डॉ ए के जैन को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए डॉ पी सी पंचारिया



विशिष्ट अतिथि श्री वी के शर्मा को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए डॉ पी सी पंचारिया



कार्यशाला का संचालन करते हुए डॉ साई कृष्णा वड्डादि, प्रभारी वैज्ञानिक, सीरी जयपुर केंद्र



धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ मेघेन्द्र शर्मा, सचिव, विज्ञान भारती, राजस्थान

में स्थित विभिन्न शोध प्रयोगशालाओं का परिदर्शन भी किया।

अतिथि सम्मान

संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने मुख्य अतिथि प्रोफेसर एन पी पाढी तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. ए के जैन तथा श्री वी के शर्मा एवं विज्ञान भारती-राजस्थान के सचिव श्री मेघेन्द्र शर्मा

को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया तथा संस्थान का निमंत्रण स्वीकार कर कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का संचालन करते हुए सीएसआईआर-सीरी के जयपुर केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक

डॉ साई कृष्णा वड्डादि ने सभी अतिथियों का औपचारिक परिचय दिया एवं कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया।

अंत में डॉ मेघेन्द्र शर्मा, सचिव, विज्ञानभारती-राजस्थान ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गान के साथ हुआ।

सीएसएमसीआरआई में 'विश्व हिन्दी दिवस' उत्साह से मनाया गया

सीएसआईआर-केन्द्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआई), भावनगर में 10 जनवरी, 2022 को विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर कोविड-19 संरक्षा का पालन करते हुये ऑनलाइन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में आईसीएमआर-क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान शोध केंद्र, गोरखपुर, उ.प्र. के निदेशक डॉ. रजनीकांत श्रीवास्तव व मुख्य अतिथि उपस्थित रहे तथा "महात्मा गांधी और भारत में जन स्वास्थ्य" विषय पर व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी-राजभाषा कार्यान्वयन, डॉ. कान्ति भूषण पाण्डेय ने सभी का स्वागत करते हुए संस्थान में हिन्दी भाषा के अद्यतन कार्यान्वयन का संक्षिप्त परिचय दिया। संस्थान के निदेशक प्रो. (डॉ.) कन्नन श्रीनिवासन ने कहा कि हिन्दी का उपयोग सभी क्षेत्रों में सहज एवं स्वाभाविक रूप से होना चाहिये। हम सब भारतीयों का यह दायित्व है कि हिन्दी को विश्व की भाषा के रूप से स्थापित करें, जो बिना हिन्दी भाषा पर गर्व और उसके रोजमर्रा के कार्यों में अधिकाधिक प्रयोगों के संभव नहीं है। आज के आधुनिक समय में लोग पश्चिमी सभ्यता से काफी प्रभावित हुए हैं। हिन्दी भाषा का महत्व समाप्त होता जा रहा है। विश्व हिन्दी दिवस लोगों को



कार्यक्रम में ऑनलाइन व्याख्यान देते मुख्य अतिथि- डॉ. रजनीकांत, निदेशक-क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान

उनकी जड़ों से जोड़े रखता है और लोगों को उनकी मूल संस्कृति की याद दिलाता है। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान के सभी कर्मियों से हिन्दी को विश्व की भाषा बनाने में सहयोग देने का आह्वान किया।

मुख्य अतिथि, डॉ. रजनीकांत ने अपने व्याख्यान में कहा कि महात्मा गांधी के बारे में हममें से ज्यादातर लोग केवल उनके स्वाधीनता के आंदोलन और विश्व शांति में उनके योगदान के बारे में जानते हैं, परंतु स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी उनका उतना ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जो आज कोरोना काल में भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि गांधीजी हिन्दी भाषा को अपने स्वाभिमान से जोड़ते थे और उनका विचार था कि चाहे देश हो या परदेश, हर भारतवासी को हिन्दी

भाषा पर गर्व होना चाहिए, इसी में देश और उसकी उन्नति संभव है। गांधीजी का विचार था कि अच्छा स्वास्थ्य ही विकसित भारत की मजबूत नींव रखेगा। हिन्दी भाषा का समग्र विकास इस लक्ष्य के लिए बहुत आवश्यक है। संस्थान के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. विश्वजीत गांगुली ने अपने उद्बोधन में हिन्दी के व्यापक प्रसार एवं अधिकतम प्रयोग पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि विश्व हिन्दी दिवस हमें यह याद दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि हिन्दी भाषा दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, और प्रत्येक भारतीय को अपनी मातृभाषा में बोलने और कार्य करने में गर्व महसूस करना चाहिए।

सीएसआईआर-केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान, चेन्नै में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस आयोजन

सीएसआईआर-केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान, चेन्नै में 24 फरवरी 2022 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया है। इस उपलक्ष्य में एक वेबिनार

आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम के अवसर पर संस्थान के प्रशासन नियंत्रक, श्री टी एस विश्वनाथ ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने

अपने वक्तव्य के दौरान अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए जीवन में मातृभाषा के महत्व को रेखांकित किया है।

इस वेबिनार का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक, डॉ. के जे श्रीराम ने अपने संबोधन के दौरान संस्थान में पहली बार अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस आयोजित किए जाने पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि विश्व में 7000 से अधिक भाषाएँ हैं, इनमें से केवल भारत में ही 4635 मातृभाषाएँ और 234 पहचान योग्य मातृभाषाएँ हैं। भूमंडलीकरण के फलस्वरूप विलुप्त हो रही अनेक भाषाओं एवं बोलियों का संरक्षण और संवर्धन करने के लिए हर वर्ष 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के बारे में जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने के मुख्य उद्देश्य से यह दिवस मनाया जाता है। विशेष रूप से वैश्वीकरण के युग में, स्थानीय और देशी भाषाओं के अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न हो रहा है। इस तरह के उत्सव भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के साथ-साथ बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए तथा समझ, सहिष्णुता और संवाद के

आधार पर एकता लाने के लिए भी बहत ही प्रासंगिक हैं। इससे भाषा आधारित शिक्षा को भी बढ़ावा मिलता है।

विज्ञान के क्षेत्र में नये आविष्कारों और खोजों के बारे में साधारण जनता को अवगत कराने के लिए देशी, स्थानीय भाषाओं का योगदान अनुपम है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से एक भाषा की विषयवस्तु को दूसरी भाषा में सरलता से अनुवाद के माध्यम से समझा जा सकता है। गूगल अनुवाद इसका प्रबल उदाहरण है।

उन्होंने आगे कहा कि इस विशेष दिन पर संस्थान के सभी अध्येताओं/परियोजना कर्मियों द्वारा तमिल में वैज्ञानिक प्रस्तुतियाँ देने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है। आने वाले वर्षों में तमिल के साथ अन्य देशी भाषाओं में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

तदुपरांत डॉ. बी चंद्रसेकरन, पूर्व निदेशक, सीएलआरआई तथा विशिष्ट वैज्ञानिक ने

अपने संबोधन के दौरान कहा कि मातृभाषा व्यक्ति के सहज अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। जिसकी मातृभाषा पर अच्छी पकड़ होती है, वह अन्य भाषाएँ भी सरलता से सीख सकता है। किसी भाषा के प्रति दुर्भावना न रखते हुए अन्य भाषाएँ सीखने के साथ-साथ अपनी मातृभाषा को विशेष महत्व देते हुए यथा संभव व्यक्तिगत और कार्यालय के कामकाज में स्थानीय भाषाओं का उपयोग करना चाहिए। विशेषकर संस्थागत वैज्ञानिक क्रियाकलापों के बारे में स्थानीय/मातृभाषा में प्रचार-प्रसार करने से बहुत जल्दी अधिकतर सामान्य जनता तक पहुंचाया जा सकता है। इस दिशा में आज का कार्यक्रम भविष्य में बहुत कारगर साबित होगा।

तदुपरांत संस्थान के 10 अध्येताओं/परियोजना कर्मियों ने अपने शोधगत विषय के बारे में प्रस्तुतियाँ दीं। इस कार्यक्रम में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों तथा शोध छात्रों ने भाग लिया।



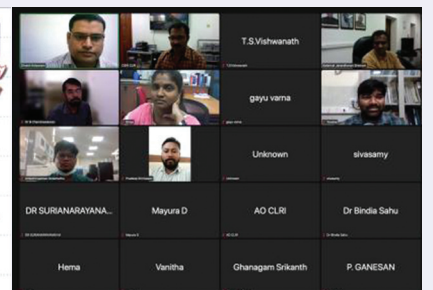
சிஎஸ்ஐஆர் - மத்திய தோல் ஆராய்ச்சி நிறுவனம்
सीएसआईआर - केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान
CSIR - Central Leather Research Institute
சர்வதேச தாய்மொழி தினம்
अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
International Mother Language Day
இணையவழி கருத்தரங்கு வெபினர் Webinar
Date : 21-02-2022 @ 09.45 am




உயிர் வெப்ப அளவிடு மற்றும் சுவாச அளவிடு
நுண்ணுயிர்கள் ஏன் வெப்பத்தை உருவாக்குகின்றன ?
உயிர் வெப்ப அளவிடு மற்றும் சுவாச அளவிடு
நுண்ணுயிர்கள் ஏன் வெப்பத்தை உருவாக்குகின்றன ?
உயிர் வெப்ப அளவிடு மற்றும் சுவாச அளவிடு
நுண்ணுயிர்கள் ஏன் வெப்பத்தை உருவாக்குகின்றன ?



நச்சு உலோக அயனிகளைக் கண்டறிவதற்கான
பெறட்டோரோசைக்களிக் வேதி உணரிகளின்
தொகுப்பு மற்றும் மேம்பாடு
Synthesis and Development of Heterocyclic Chemosensors for Detection of
Toxic Metal Ions
இய்யா தட்சிணாமூர்த்தி
இளங்கோ இன்ஸ்பைர் என்.ஆர்.எப்.
Dr. S. Dakshinamurthy
Dr. Inbanagar IINSPIRE-SEF
முனைவர், சா. தென்னரசு
தலைவர், சா. தென்னரசு
தலைவர், சா. தென்னரசு
தலைவர், சா. தென்னரசு



सीएसआईआर-आईएचबीटी के सहयोग से कालिम्पोंग में सुगंधित फूलों की खेती

कालिम्पोंग के पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण तथा गर्मी के मौसम में भी यहाँ का तापमान नियंत्रित रहने से सीएसआईआर-आईएचबीटी ने इस क्षेत्र को सुगंधित फूलों की खेती के लिए मान्यता दी है। अब कालिम्पोंग के लोगों को फूलों को खेती करके आत्मनिर्भर बनने का मौका मिलेगा। इसी क्रम में सीएसआईआर-आईएचबीटी के वैज्ञानिक कलिम्पोंग के किसानों के लिए जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। सीएसआईआर-आईएचबीटी (पालमपुर) के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने कहा कि सीएसआईआर ने साल 2017 को अरोमा मिशन और किसान समुदाय व ग्रामीण जनता के लिए सामाजिक-आर्थिक उत्थान और मिशन 2020 कार्यक्रम देश भर में शुरू किया है।

सुगंधित पौधों के मूल्यवर्धन के लिए प्रसंस्करण इकाई अपरिहार्य है और कालिम्पोंग में इस सुविधा की स्थापना से स्थानीय किसानों को, लाभ होगा। सीएसआईआर-आईएचबीटी ने मणि ट्रस्ट के सहयोग से 7 अप्रैल, 2022 को दोंग बस्ती, पेशोक और 4 माइल ताशिडिंग में विविधीकरण और आजीविका सृजन के लिए उपयुक्त सुगंधित फसलों पर प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में कुल 35 किसानों ने हिस्सा लिया।

जागरूकता कार्यक्रम के मौके पर मणि ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुभाष सिंह, उपाध्यक्ष, श्रीमती इंदिरा शर्मा और संस्थापक ट्रस्टी, संस्थापक रिजवान रहमान उपस्थित रहे। सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर के

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक सह सीओ नोडल डॉ. राकेश कुमार ने 2017 में अरोमा मिशन शुरू किया और मार्च 2020 तक अरोमा मिशन चरण के तहत 550 हेक्टेयर क्षेत्र को कवर किया है। अरोमा मिशन की सफलता के बाद सीएसआईआर-आईएचबीटी ने अब फिर से अरोमा मिशन चरण-2 आरम्भ किया है जो भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र सहित किसानों के स्वरोजगार सृजन सामाजिक-आर्थिक उत्थान में मदद करेगा। दुनिया भर में सुगंधित फसलों की खेती व्यापक रूप से उनकी उच्च राजस्व कमाई वाले आवश्यक तेल के कारण की जाती है, जिसका उपयोग कृषि रसायन, भोजन, स्वाद, सुगंध और दवा उद्योग में किया जाता है। वैश्विक सुगंधित तेलों के बाजार का आकार वर्ष 2021 में 10.3 बिलियन अमरीकी डॉलर था और पूर्वानुमान अवधि के दौरान 9.3 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ते हुए वर्ष 2026 तक 16.0 बिलियन अमरीकी डॉलर के मूल्य तक पहुंचने की उम्मीद है। डॉ. कुमार ने यह भी कहा कि कालिम्पोंग क्षेत्र उच्च मूल्य वाले सुगंधित फसलों जैसे डैमस्क गुलाब, मुशकबाला, लेमनग्रास, सिट्रोनेला और कैमोमाइल को खेती के लिए उपयुक्त है। सीएसआईआर-आईएचबीटी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. मोहित शर्मा ने बताया कि प्राकृतिक और जैविक उत्पादों के प्रति उपभोक्ताओं का झुकाव बढ़ रहा है जिसके कारण सौंदर्य प्रसाधन, भोजन और पेय पदार्थों में आवश्यक तेलों का उपयोग बढ़ गया है। संस्थान सुगंधित पौधों के प्रसंस्करण के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री, क्षमता निर्माण और मूल्यवर्धन प्रदान करके किसानों की मदद

करेगा और बाजार संपर्क स्थापित करने में मदद करेगा। इस सीजन के दौरान 'कालिम्पोंग' में एक प्रोसेसिंग यूनिट भी लगाई जाएगी। मणि ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुभाष सिंह ने बताया कि यह कलिम्पोंग क्षेत्र में सुगंधित और फूलों को खेती में अग्रणी सीएसआईआर संस्थान के सहयोग से काम करने और क्षेत्रीय किसानों को अधिकतम लाभ प्रदान करने को अनुमति देगी। उन्होंने मुद्रास्फीति को मात देने के लिए परिवार की आय में वृद्धि पर भी जोर दिया जिससे किसान आपने परिवार के बच्चों को शिक्षा, आपातकालीन स्वास्थ्य खर्च और सुरक्षित सेवानिवृत्ति के लिए पैसे बचा सके। महत्वपूर्ण रूप से हर घर को आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा होना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि मणि ट्रस्ट डिस्टिलेशन यूनिट की स्थापना के लिए भूमि प्रदान कर रहा है ताकि सुगंधित पौधों को कलिम्पोंग में संसाधित किया जा सके। परिवार की आय में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए मूल्य संवर्धन द्वारा फसल का मुद्रीकरण किया जा सके।

उन्होंने आगे बताया कि मणि ट्रस्ट ने सीएसआईआर-आईएचबीटी के साथ उच्च मूल्य वाली सुगंधित फसलों को बढ़ावा देने और कलिम्पोंग में सुगंधित फसलों के लिए प्रसंस्करण इकाई की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। उन्होंने मणि ट्रस्ट के साथ सहयोग करने के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी की पहल के प्रति भी आभार व्यक्त किया, जिससे किसानों को उनको आजीविका में सुधार करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में मदद मिलेगी।

सीएसएमसीआरआई, भावनगर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का भव्य आयोजन

सीएसआईआर—केंद्रीय नमक व समुद्री रासायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआई), भावनगर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 14 मार्च, 2022 को हाइब्रिड मोड में एक भव्य आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रो. कन्नन श्री निवासन ने की। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. श्री देवी अन्नपूर्णा सिंह, निदेशक, सीएसआईआर—सीएफटीआरआई, मैसूर ने एक महिला के तौर पर अपनी वैज्ञानिक यात्रा पर व्याख्यान देते हुये इसका उल्लेख किया कि चाहे महिला हो या पुरुष, संघर्ष सबको करना पड़ता है। ऐसा संभव है कि एक महिला के रूप में संघर्षों के प्रकार और उसका प्रभाव अधिक या कम हो सकता है। उन्होंने भारत सरकार की महिला सशक्तिकरण से संबंधित योजनाओं पर भी प्रकाश डाला। समारोह में डॉ. निधि वासनी आइयर (प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ) द्वारा “महिला स्वास्थ्य एवं कल्याण: स्तन कैंसर और जागरूकता” विषय पर व्याख्यान दिया गया। निदेशक प्रो. श्रीनिवासन ने



अवसरों में समानता हेतु महिलाओं को आगे आने का आह्वान किया। इस दौरान “जेण्डर बायस थ्रू योर आईस” विषय पर एक चित्रकारी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें शोधकर्ताओं, कर्मचारियों और अन्य छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता में तीन प्रतियोगियों को श्रेष्ठ चित्र के लिए पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम की आयोजक डॉ. (श्रीमती) सुवर्णा मैती ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का अर्थ किसी जेंडर विशेष से प्रतिस्पर्धा नहीं बल्कि एक महिला के रूप में खुद को सशक्त करना है। समारोह का समापन संस्थान के प्रशासन नियंत्रक श्री सुभाष चंद्र द्वारा धन्यवाद ज्ञापन द्वारा किया गया।

सीएसआईआर-निसपर ने दिव्यांग बच्चों के लिए आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किया

पढ़ने, लिखने, व्यवहार संबंधी समस्याओं और मूल अवधारणाओं की सीमित पूर्व समझ सहित अकादमिक कौशल के साथ गंभीर कठिनाइयों के कारण विशेष आवश्यकता वाले छात्र विज्ञान में काफी कम उपलब्धि दिखा पाते हैं। शिक्षा में, दिव्यांग छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के तरीके खोजना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

समावेशी शिक्षा, इन छात्रों को सशक्त बनाने में जो सभी दिव्यांग छात्रों या अन्य सीखने की चुनौतियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में पूर्ण रूप से जोड़ती है, सभी छात्रों को शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को सीखने में मदद करने में विशेष रूप से प्रभावी साबित हुई है। पिछले वर्षों में, विभिन्न रचनात्मक विधियों के रूप में इन बच्चों के लिए विशेष शिक्षा विकसित की

गई है जो विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए प्रेरणा प्रदान कर सकती है।

इसे आगे बढ़ाने के लिए और विशेष रूप से विकलांग बच्चों को वैज्ञानिक मुद्दों के बारे में जागरूक करने और उनमें वैज्ञानिक सोच पैदा करने के उद्देश्य से दिव्यांग बच्चों के लिए सीएसआईआर—राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान

के आउटरीच, जिज्ञासा, प्रशिक्षण और मानव संसाधन प्रभाग द्वारा 29 मार्च, 2022 को बाल विकास केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में एक आउटरीच और संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

सीएसआईआर-निस्पर टीम द्वारा आयोजित आउटरीच कार्यक्रम इन विशेष छात्रों के लिए अपनी रुचियों की पहचान करने और उनकी सीखने की क्षमता का आकलन करने का एक बड़ा अवसर था। इस तरह के कार्यक्रम विशेष जरूरतों वाले बच्चों के व्यवहारिक विकास में मदद कर सकते हैं, उनके सामाजिक अलगाव को कम करने और उनके संचार कौशल में सुधार करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकते हैं जिस से चीजों को बेहतर

तरीके से समझने के लिए उनके दिमाग और अन्य कौशल को विकसित किया जा सके।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ निशात नकवी, निदेशक, बाल विकास केंद्र ने इस अद्भुत आयोजन के लिए निदेशक प्रो रंजना अग्रवाल, सीएसआईआर-निस्पर और आउटरीच, जिज्ञासा, प्रशिक्षण और सीएसआईआर-निस्पर मानव संसाधन प्रभाग को धन्यवाद दिया। उन्होंने इन छात्रों को बाल विकास केंद्र द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं पर प्रकाश डाला और इन बच्चों से जुड़ने के विभिन्न तरीकों का भी वर्णन किया।

श्री सी.बी. सिंह, प्रमुख, आउटरीच, जिज्ञासा, प्रशिक्षण और मानव संसाधन प्रभाग ने सीएसआईआर-निस्पर और इसके आउटरीच विभाग के उद्देश्य के विषय में

बताया। उन्होंने जोर देकर कहा कि सीएसआईआर-निस्पर ने हमेशा पिछले कई वर्षों से स्कूली छात्रों को प्रेरित करने पर ध्यान केंद्रित किया है, हालांकि दिव्यांग बच्चों के लिए यह पहल पहले कभी नहीं की गई थी। यह आयोजन अपनी तरह का पहला आयोजन था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ऐसे बच्चों को शिक्षा से जोड़ने और उन्हें प्रेरित करने पर था।

प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के बाल विकास केंद्र को इन बच्चों के लिए महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु बधाई दी। उन्होंने बच्चों को अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहने के लिए प्रेरित किया। प्रो. रंजना ने इस बात पर प्रकाश डाला कि माता-पिता कई तरह



प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर केंद्र की सुविधाओं का दौरा करते हुए



डॉ निशात नकवी, निदेशक सीडीसी केंद्र में उपलब्ध सुविधाओं के विषय में बताते हुए



श्री सी बी सिंह, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर इस कार्यक्रम के विषय में बताते हुए



प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर बच्चों को प्रेरित करते हुए



निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर विशेष किट का वितरण करते हुए



क्विज तथा पेंटिंग प्रतियोगिता का दृश्य



से छात्रों की प्रेरणा को बेहतर बनाने में मददगार हो सकते हैं उदाहरण के लिए घर के माहौल में उनके पालन पोषण का विशेष ध्यान रखने तथा संयोगात्मक व्यवहार के द्वारा भी और सहायक होना। उन्होंने कहा कि हमें उनकी ताकत को अधिकतम करके हर दिन उन्हें प्रेरित करने का हर संभव तरीका खोजना चाहिए। प्रो. रंजना अग्रवाल ने कहा कि सीएसआईआर-निस्पर इन बच्चों की बेहतरी के लिए भविष्य में मदद के लिए हमेशा तत्पर रहेगा।

छात्रों को और अधिक प्रेरित करने के लिए, इस अवसर पर प्रश्नोत्तरी और पेंटिंग जैसी इंटरैक्टिव गतिविधियों का आयोजन किया गया। बच्चे सभी पहलुओं में अपनी सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा दिखाने के लिए बहुत ही संवेदनशील और उत्सुक थे। सभी गतिविधियों में बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

सुश्री फरहत आजाद, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर ने इस तरह के आयोजनों की आवश्यकता को स्वीकारते हुए इस आयोजन को सफल बनाने

के लिए बाल विकास केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय को धन्यवाद दिया। उन्होंने सीएसआईआर-निस्पर आउटरीच टीम के सदस्यों को भी इस आयोजन का सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया और सभी दिव्यांगों को इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया।

सराहना के प्रतीक के रूप में सभी बच्चों को एक विशेष किट वितरित की गई। इस अवसर पर बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था।